61

भाग 2 (14:1-15:13):

''जिसके लिए मसीह मरा''

(14:13ख-18)

मण्डलियों के झगड़े आमतौर पर छोटे-छोटे होते हैं। कई तो बड़े ही मामूली होते हैं, जैसे ''ढंग और उदाहरण तथा प्रभाव।''[1]

- ढंग: ''हमें इस कार्य को कैसे पूरा करना चाहिए?''
- उदाहरण: ''क्या आपने पहले कभी ऐसा किया है?''
- प्रभाव: ''काम हो जाने पर श्रेय किसे मिलेगा?''

रोमियों 14:13-18 में पौलुस ने इस प्रकार की असहमतियों को[2] ऊंचे स्तर पर उठा दिया। जब हम किसी भाई के साथ सहमत नहीं होते, तो हम उसे हठधर्मी, ढीठ या यहां तक कि शायद घृणित भी मानने लगते हैं। पौलुस ने चाहा कि हम उसे उस व्यक्ति के रूप में देखें ''जिसके लिए मसीह मरा'' (आयत 15ग)। ये चार शब्द हमारे दिलों में समा जाने चाहिए कि ''जिसके लिए मसीह मरा।'' टी. आर. ग्लोवर ने सुझाव दिया कि उन ''चार शब्दों ने [अमेरिका में] गुलामी खत्म कर दी।''[3] हाफर्ड लकॉक ने उन्हें ''नि:स्वार्थ आचरण के लिए अब तक का सबसे शक्तिशाली तर्क'' कहा।[4]

रोमियों 14 की पहली बारह आयतों का अध्ययन करते हुए हमने देखा था कि पौलुस ने ''निर्बल'' और ''बलवान'' दोनों तरह के मसीही लोगों से बात की थी। अध्याय के अन्तिम भाग में, उसने अपनी टिप्पणियां ''बलवान'' भाई के लिए दीं। वह चाहता था कि ''बलवान'' भाई ''निर्बल'' भाई पर एक नज़र फिर डालें। ''निर्बल'' भाई को *विरोधी* के रूप में देखने के बजाय पौलुस ने बलवान से चाहा कि वह उसे *अवसर* के रूप में देखे यानी उसकी सहायता करने के अवसर के रूप में ''जिसके लिए मसीह मरा।''

एक संवेदनशील भाई (14:13ख, 14)

कुछ निश्चित करने के लिए (आयत 13)

आयत 13 का आरम्भ ''सो'' से होता है, जो इसे 1 से 12 आयतों को जोड़ता है। पहले तो यह आयत पिछले पाठ के संदेश को संक्षिप्त करती है: ''सो आगे को हम एक-दूसरे पर दोष न लगाएं'' (आयत 13क)। बहुत से कारण हैं कि हमें दूसरों पर दोष लगाने में उतावली नहीं करनी चाहिए।

सर्वव्यापी न होने के कारण, हम सभी तथ्यों को नहीं जानते हैं। लोगों के मनों में न देख

पाने के कारण हम उनके उद्देश्य को नहीं पढ़ सकते हैं। सीमित होने के कारण, हमें ''बड़ी तस्वीर'' नहीं मिलती है। आत्मिक नज़र कमज़ोर होने के कारण अंधबिन्दुओं में और अस्पष्ट दृष्टिकोणों में रहते हैं। हम में से अधिकतर मनुष्य होने के कारण अपूर्ण, असंगत और काल्पनिक होते हैं।[5]

आयत 13 के आरम्भिक निर्देशों में शब्दों का खेल है: ''सो आगे को हम एक-दूसरे पर दोष [*krino* से] न लगाएं पर तुम यही ठान लो [*krino* से]'' (आयत 13क, ख)। KJV में *krino* के दोहरे इस्तेमाल का संकेत मिलता है: ''इसलिए अब से हम में से कोई एक दूसरे का *न्याय* न करे: परन्तु इसके बजाय यह न्याय *करो* ...।''[6] हमें दूसरों का न्याय करना बन्द करके अपना न्याय करना आवश्यक है।

पौलुस ने सही की आवश्यकता के साथ सही व्यवहार की आवश्यकता को मिला दिया: ''... ठान लो ... कि कोई अपने भाई के सामने ठेस या ठोकर खाने का कारण न रखे'' (आयत 13ख, ग)। यूनानी शब्द जिनका अनुवाद ''ठेस'' और ''ठोकर'' किया गया है, का एक ही अर्थ है। ''ठेस'' शब्द *proskomma* (*pros* [''के लिए''] और *kopto* [''मारना'']) से लिया गया है, जिसका अर्थ ''कोई रुकावट जिसमें किसी का पैर लग सकता है।''[7] ''ठोकर'' शब्द *skandalon* से लिया गया है, जिससे हमें अंग्रेज़ी का ''scandal (स्कैंडल)'' और ''scandalous (स्कैंडलस)'' शब्द मिला है।[8] मूल में *skandalon* शब्द ''उस जाल को कहा जाता था जिससे चारा जोड़ा जाता [था]।'' CJB में इस शब्द का अनुवाद ''जाल'' के रूप में किया गया है; आर. सी. एच. लैंसकी के अनुवाद में ''खतरनाक जगह'' शब्द इस्तेमाल किया गया है।[9] नये नियम में *skandalon* का इस्तेमाल बदलने वाले के लिए किया जाता है और इसका संकेत वह होता है, जो ''दूसरों के लिए रुकावट बनता है, या मार्ग में उनके गिरने का कारण बनता है।''[10]

पाठ में आगे चलकर हम चर्चा करेंगे कि किसी भाई के मार्ग में ठेस या ठोकर रखने का पौलुस का क्या अर्थ है। अभी के लिए हम इस मूल सच्चाई को साबित करते हैं: हम कोई ऐसी बात *न* करें जिससे किसी भाई को ठेस लगे या वह गिर जाए। हमारे मनों में एक प्रश्न रहना चाहिए कि ''अपने भाई को प्रभावित करने के लिए मैं क्या करूंगा?'' संसार के लोग अपने अधिकारों के प्रति चिन्तित हैं, परन्तु मसीही लोगों को अपनी ज़िम्मेदारियों के प्रति अधिक चिन्तित होना चाहिए।[11]

कुछ जानना (आयत 14)

आयत 14 का आरम्भ मांस खाने के मुद्दे पर परमेश्वर की प्रेरणा से पौलुस की मज़बूत अभिव्यक्ति के साथ होता है: ''मैं जानता हूं, और प्रभु यीशु से मुझे निश्चय हुआ है'' (आयत 14क)। यह पौलुस के यह कहने का ढंग था कि ''मेरे मन में किसी प्रकार का कोई संदेह नहीं है।'' ''प्रभु यीशु से'' का अर्थ हो सकता है कि पौलुस को इस विषय पर यीशु से विशेष प्रकाशन मिला हो, या इन शब्दों का अर्थ हो सकता है कि प्रभु के साथ अपनी लम्बी संगति के कारण वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा हो।

पौलुस को किस बात पर इतना यकीन था? ''कोई वस्तु अपने आप से अशुद्ध नहीं'' (आयत 14ख)। ''अशुद्ध'' (*koinos* [''साधारण''] से) शब्द यहूदी लोगों द्वारा उसके लिए इस्तेमाल

किया जाता था जो ''औपचारिक रूप से अशुद्ध'' होता था।[13] पौलुस की बात में कुछ गुण होना आवश्यक है क्योंकि अन्य पत्रों में वह ''बिल्कुल स्पष्ट है कि हमारे कुछ विचार, बातें और काम बहुत बुरे होते हैं।''[14] मूल में परमेश्वर ने यह घोषणा की थी कि उसने जो कुछ बनाया, वह सब ''अच्छा'' था (उत्पत्ति 1:31), परन्तु (सारी नहीं तो) उसकी अधिकतर सृष्टि या तो श्रापित हुई या उसका दुरुपयोग हुआ। तौभी ''अपने आप में'' (अपने आवश्यक स्वभाव में) सृष्टि ''अच्छी'' ''शुद्ध'' रहती है (देखें 1 तीमुथियुस 4:4)। संदर्भ में पौलुस विशेष रूप से मांस की बात कर रहा था। मांस मूर्तियों को भी भेंट किया गया हो, या चाहे यह कोशर की शर्तों के अनुसार तैयार किया गया तौ भी कोई मांस ''अपने आप में अशुद्ध'' नहीं था।

पौलुस की बात पर ध्यान दें ''परन्तु जो उस को अशुद्ध समझता है, उसके लिए अशुद्ध है'' (रोमियों 14:14ग)। क्यों? ''क्योंकि वह शुद्ध विवेक से इसका इस्तेमाल नहीं कर सकता या इसमें या भाग नहीं ले सकता।''[15] विवेक के विषय में हमें इस महत्वपूर्ण सच्चाई को समझने की आवश्यकता है कि यदि आपका विवेक आपको बताता है कि *आप के लिए* कोई बात गलत है तो वह गलत है। रोमियों 2:14, 15 की अपनी चर्चा में हमने देखा था कि विवेक की बात को न तोड़ना कितना आवश्यक है।[16] जब कोई व्यक्ति वह करने पर ज़ोर देता है जिसे उसका विवेक गलत कहता है, तो वह अपने विवेक को दगा देता है (देखें 1 तीमुथियुस 4:2) जिससे वह सुरक्षा देने का परमेश्वर द्वारा दिया काम पूरा करने में नाकाम रहता है। यदि किसी ने अपने मन में गलत अवधारणा बना रखी है (जैसे ''निर्बल'' भाई ने किया), तो विवेक को फिर से सिखाया जाना आवश्यक है; परन्तु जब तक उसे सिखाया नहीं जाता, तब तक उसे अपने विवेक के विरुद्ध नहीं जाना चाहिए। यदि वह ''किसी भी चीज़ को अशुद्ध *मानता है* तो उसके लिए यह अशुद्ध है।''

निर्बल हो या ''बलवान'' आयत 14 में हर मसीही के लिए संदेश है, परन्तु याद रखें कि पौलुस के शब्द विशेषकर ''बलवान'' व्यक्ति के लिए हैं। प्रेरित ''बलवान'' भाई के प्रति ''निर्बल'' भाई से अधिक समझ रखने, उसके लिए अधिक तरस रखने की इच्छा रखता था। वह एक संवेदनशील भाई था, जिसके लिए मसीह मरा।

एक मूल्यवान भाई (14:15)

एक महत्वपूर्ण अन्तर

आयत 15 का आरम्भ ''क्योंकि'' (*gar,* ''के लिए कारण दिखाते हुए'') के साथ होता है। यह शब्द सम्भवतया आयत 13 की ओर संकेत करता है, जो कहता है, ''सो तेरा भाई तेरे भोजन के कारण उदास होता है, तो फिर तू प्रेम की रीति से नहीं चलता'' (आयत 15क)। यूनानी भाषा में यहां ''भोजन'' (*broma*) के लिए सामान्य शब्द है, परन्तु यह मांस की बात करता है जिसे कुछ मसीही लोग तो खाते थे परन्तु दूसरे नहीं खाते थे।

''उदास होता है'' वाक्यांश *lupeo* अर्थात ''एक मज़बूत शब्द''[17] से लिया गया है, जिसका अर्थ ''शोकित होना, ... दुखित होना।''[18] संदर्भ में *lupeo* का अर्थ भावनात्मक रूप से परेशान होने से कहीं अधिक के लिए है। अगला वाक्य (आयत 15ख) ''उदास'' होने को (आयत 15ख) नाश होने से मिलाता है। पौलुस एक भाई के *आत्मिक* रूप से *आहत होने* अर्थात

अनन्तकाल के लिए नष्ट होने की बात कर रहा था।

मांस खाना किसी ''निर्बल'' भाई को उदास, ठेस और गिरा कैसे सकता है, जिससे वह नष्ट हो जाए? इसका बढ़िया उत्तर 1 कुरिन्थियों 8 में मिलता है, जिसमें यही नहीं तो कम से कम ऐसी ही स्थिति का वर्णन है:

> सो मूरतों के सामने बलि की हुई वस्तुओं के खाने के विषय में हम जानते हैं, कि मूरत जगत में कोई वस्तु नहीं, और एक को छोड़ और कोई परमेश्वर नहीं। ...
>
> परन्तु सब को यह ज्ञान नहीं; परन्तु कितने तो अब तक मूरत को कुछ समझने के कारण मूरतों के सामने बलि की हुई को कुछ वस्तु समझकर खाते हैं, और उन का विवेक निर्बल होकर अशुद्ध होता है। भोजन हमें परमेश्वर के निकट नहीं पहुंचाता, यदि हम न खाएं, तो हमारी कुछ हानि नहीं, और यदि खाएं, तो कुछ लाभ नहीं। परन्तु चौकस रहो, ऐसा न हो, कि तुम्हारी यह स्वतन्त्रता कहीं निर्बलों के लिए ठोकर का कारण हो जाए। क्योंकि यदि कोई तुझ ज्ञानी को मूरत के मन्दिर में भोजन करते देखे, और वह निर्बल जन हो, तो क्या उसके विवेक में मूरत के सामने बलि की हुई वस्तु के खाने का हियाव न हो जाएगा। इस रीति से तेरे ज्ञान के कारण वह निर्बल भाई जिस के लिए मसीह मरा नाश हो जाएगा (1 कुरिन्थियों 8:4–11)।

डग्लस जे. मू ने एक दूसरी सम्भावना जोड़ी: ''बलवान'' भाई का मांस खाने की अपनी स्वतन्त्रता पर इतराना ''निर्बल'' भाई के लिए ठोकर का कारण हो सकता है जिससे वह बिल्कुल दूर चला जाए।[19] परन्तु पौलुस की मुख्य दिलचस्पी इस बात में थी कि जब ''निर्बल'' भाई ''बलवान'' भाई को मांस खाते देखेगा तो वह भी मांस खाएगा, चाहे उसका विवेक उसे यह बताता हो कि यह गलत है। ऐसा करके वह *पाप* करेगा और *दोषी ठहरेगा* (रोमियों 14:23)।

पहले मैंने ऐसे व्यक्ति को परिवर्तित करने का उदाहरण दिया था जिसे यह सिखाया गया था कि शुक्रवार के दिन मांस खाना गलत है। मैंने सुझाव दिया कि उसके बपतिस्मा लेने के तुरन्त बाद उसे ऐसी शिक्षा के बेतुके पन पर भाषण देने की आवश्यकता नहीं है।[20] मैं इस उदाहरण में जोड़ना चाहता हूं कि आपको ऐसे भाई को अगले शुक्रवार खाने पर बुलाकर उसे टिक्का खिलाने की आवश्यकता नहीं है।[21] ऐसा करना उसे अपने विवेक के विरुद्ध जाकर पाप करने के लिए प्रेरित करेगा।

मुझे इस बात पर ज़ोर देना आवश्यक है कि हमारा वचन पाठ किसी ऐसी बात को केवल इसलिए गलत नहीं ठहराता कि किसी दूसरे भाई या बहन ने उसे स्वीकार नहीं किया है। प्रचार करने के अपने दर्शकों के अनुभव के बाद मैं आपको बता सकता हूं कि किसी मण्डली में चाहे जो भी किया जाता है (या नहीं किया जाता), कम से कम एक सदस्य ऐसा अवश्य होगा जो उसे पसन्द न करे। जिस बात को कोई ''पसन्द नहीं करता'' उसे बंद करने से कलीसिया का काम बंद हो सकता है।

एक बार फिर, हमें संतुलन करना है, हमें कुछ नकारात्मक टिप्पणियों के कारण कोई अच्छा काम रोक नहीं देना चाहिए। इसके साथ ही हमें दूसरों के विश्वास के प्रति संवेदनशील होना और कुछ ऐसा करने से बचना आवश्यक है जिससे उन्हें अपने विवेक के विरुद्ध जाना पड़े। जिस भी

मण्डली में मैंने सेवा की है वहां ऐसे कुछ लोग होते थे जो इस या उस काम में विवेकपूर्ण ढंग से शामिल नहीं हो पाते थे। हम यह ज़ोर नहीं देते थे कि उन्हें उस बात में भाग लेना आवश्यक है और वे इसे मुद्दा नहीं बनाते थे। वे केवल उसमें भाग नहीं लेते थे ताकि वे अपने विवेक के विरुद्ध न जाएं। हमें उन भाइयों को जो विवेकी होते हैं उनसे अलग करना आवश्यक है जो केवल झगड़ालू होते हैं। यह आसान नहीं होता। कई बार आपको घुटनों के बल परमेश्वर से बुद्धि मांगना आवश्यक होता है (देखें याकूब 1:5)।

प्रेरणादायक समर्पण

भिन्नताओं की चर्चा से हमारा ध्यान उस शक्तिशाली संदेश से हटना नहीं चाहिए, जो पौलुस ने देना चाहा। ''यदि तेरा भाई तेरे भोजन [मांस खाने] के कारण [आत्मिक रूप से] उदास होता है, तो फिर *तू प्रेम की रीति से नहीं चलता*[22]'' (आयत 15क, ख)। पौलुस को इस बात की इतनी चिंता नहीं थी कि कौन सही है और कौन गलत, जितनी इस बात की कि वह *प्रेम* को दिखाना चाहता था।

रोमियों 13:8 में पौलुस ने आज्ञा दी, ''आपस के *प्रेम* को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्ज़दार न हो।'' लियोन मौरिस ने लिखा है, ''मसीही लोगों के लिए [,] प्रेम ही मानक है और प्रेम ही प्रेरक।''[23] हम में से अधिकतर लोग असहमतियों को न पसन्द करते हैं और उन्हें केवल नकारात्मक मानते हैं। यदि हम उन्हें ''मसीही प्रेम को व्यवहार में लाने के अवसरों'' के रूप में देखें तो सहायता मिले।[24]

आवश्यक संकल्प

आयत 15 इस उत्तेजक आदेश के साथ समाप्त होती है: ''जिस के लिए मसीह मरा उस को तू अपने भोजन के द्वारा नाश न कर'' (आयत 15ग; 1 कुरिन्थियों 8:11 से तुलना करें)। फिर पौलुस ने कठोर भाषा का इस्तेमाल किया।[25] ''नाश'' शब्द *apollumi* से लिया गया है जो ''पूरी तरह से नाश'' करना का संकेत देता है।[26] पूरी तरह से नाश होने का खतरा किसे था? ''जिसके लिए मसीह मरा उसको'' यानी उस भाई को जो प्रभु के लिए इतना मूल्यवान था कि वह उसके लिए क्रूस पर चढ़ गया।

इससे पौलुस के पाठकों के लिए हर बात समझ में आ गई होनी चाहिए। एक ओर तो मांस खाना सही है और दूसरी ओर यह उसके लिए अनन्त विनाश, जिसके लिए यीशु मरा था। जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने पूछा, ''क्या मसीह ने उससे इतना प्रेम किया कि वह उसके लिए मर गया और क्या हमें उससे इतना प्रेम नहीं करना चाहिए कि हम अपने विवेक को घायल होने से बचाएं?'' पौलुस के शब्दों से हमारे लिए भी विषय परिप्रेक्ष्य में आ जाना चाहिए। अगली बार जब आपका किसी के साथ गम्भीर झगड़ा हो जाए, तो असहमति के विषय की तुलना क्रूस से करो। इनमें से कौन सा महत्वपूर्ण है? पौलुस हम से कह सकता है:

- ''जिसके लिए मसीह मरा उसको *तू अपनी इच्छा मनवाकर* नाश मत कर।''
- ''जिसके लिए मसीह मरा उसको अपने अधिकारों पर ज़ोर देकर नाश मत कर।''

- ''जिसके लिए मसीह मरा उसको अपनी भावनाओं के आहत होने पर वापस चोट मारकर नाश मत कर।''

एक आवश्यक भाईचारा (आयत 14:16-18)

अपने प्रभाव पर नज़र रखो

आयत 16 एक और ''सो'' से आरम्भ होती है। पौलुस और निष्कर्ष निकालने को तैयार था। उसने कहा, ''सो अब तुम्हारी भलाई की निन्दा न होने पाए[28]'' (आयत 16)। ''तुम्हारी भलाई'' का अर्थ यहां मांस खाने से है ''बलवान'' भाई के लिए मांस खाना ''अच्छी बात'' थी, जिससे उसे आनन्द मिलता और परमेश्वर को स्वीकार्य है। परन्तु कुछ परिस्थितियों में ''इसे खाना और प्रतिक्रिया कराना बुराई'' करने की तरह हो सकता है।

मांस खाने के बारे में ''निंदा'' कौन करेगा? यह हो सकता है कि पौलुस के मन में ''निर्बल'' भाई हो, परन्तु आयत 16 से 18 में प्रेरित ने सामान्य अर्थ में मनुष्यजाति को शामिल करने के लिए मुद्दे की शाखाओं को विस्तार दिया। (आयत 18 ''मनुष्यों'' कहती है।) मेरे विचार से पौलुस की चिंता यह थी कि कलीसिया में झगड़े किस तरह मसीह के कार्य को प्रभावित करते हैं। मांस खाने में अपने आप में कोई बुराई नहीं थी, परन्तु यदि इससे धड़े बनते हों, भावनाएं आहत होती हों और यहां तक कि मण्डली में फूट पड़ती हो, तो यह बहुत ही गलत था। कलीसिया के उन सदस्यों से बढ़कर जो एक दूसरे के साथ चल नहीं सकते मसीह के काम को और कोई हानि नहीं पहुंचाता। स्पष्टतया मण्डली में गड़बड़ की खबर समाज में फैल जाती है और कलीसिया लोगों के मज़ाक का कारण बन जाती है। ऐसा होने पर, फिर ''अच्छी बात'' की वास्तव में ''निंदा की जाती'' है।

''भलाई'' के बारे में ''निंदा'' की बातें अन्य ढंगों से हो सकती हैं। एक उदाहरण ध्यान में आता है।[29] अमेरिका की एक जवान महिला किसी दूसरे देश में एक मण्डली की सहायता के लिए गई। अमेरिका में बेसबॉल को ''राष्ट्रीय पास्टाइम'' कहा जाता है, सो उस युवती ने मण्डली के बच्चों को बेसबॉल खिलाने का निर्णय लिया। जब वे खेल रहे थे तो कलीसिया के एक ऐल्डर ने उन्हें देखा और उस युवती को एक ओर बुलाया। उसने उससे कहा कि उनके देश में बेसबॉल को जुए से इतना मिलता-जुलता माना जाता है कि मसीही लोग वहां इस खेल को नहीं खेलते। उस युवती ने क्षमा मांगी और बच्चों के करने के लिए और काम ढूंढ़े।

हम जो कुछ भी करते हैं उन सब के लिए हमें अपने आप से ऐसे प्रश्न पूछने आवश्यक हैं ''इससे मसीह के काम और सुसमाचार के फैलाव में क्या अवसर होगा?''; ''क्या इससे मेल होगा या झगड़ा?''; ''इससे कलीसिया का विकास होगा या रुकेगा?''

अपनी प्राथमिकताओं पर काम करें

आयत 17 में आयत 16 से आरम्भ किया गया विचार पूरा होता है: ''अब तुम्हारी भलाई की निन्दा न होने पाए। क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना-पीना [भोजन करना[30]] नहीं; परन्तु धर्म और मिलाप और वह आनन्द है'' (आयतें 16, 17)।

''परमेश्वर का राज्य'' यहां कलीसिया को कहा गया है।[31] पौलुस एक दूसरे का ध्यान रखने

से सामान्य भाईचारे का ध्यान रखने की ओर बढ़ गया, अन्य शब्दों में उन *सब* का ध्यान रखने की ओर ''जिनके लिए मसीह मरा'' (देखें इफिसियों 5:23, 25)। राज्य/कलीसिया को अस्तित्व में लाने के लिए परमेश्वर द्वारा किए गए कामों पर विचार करें। क्या उसने इसे इसलिए लाया ताकि लोग बैठकर बहस कर सकें कि खाने में क्या दिया जाए? नहीं पौलुस ने कहा कि राज्य/कलीसिया ऐसा कदाचित *नहीं* है (देखें 1 कुरिन्थियों 8:8), बल्कि, ''परमेश्वर का राज्य ... धर्म और मिलाप और पवित्र आत्मा में आनन्द है।''[32]

- ''धर्म'' (*dikaiosune*): वैसे जीना जैसे परमेश्वर चाहता है कि हम जीएं।
- ''मिलाप'' (*eirene*): अपने भाइयों और बहनों के साथ मेल मिलाप से रहने की कोशिश करना।
- ''आनन्द'' (*chara*): दूसरों के जीवनों में आनन्द, वह आनन्द लाने के लिए काम करना जो केवल ''पवित्र आत्मा में'' पाया जा सकता है।[33]

फिर पौलुस ने मसीही लोगों को सही प्राथमिकताएं बनाने की चुनौती दी। अगली बार जब किसी बेकार बात के लिए हमें गुस्सा आ जाए तो हमें रुककर पूछना चाहिए, ''क्या राज्य सचमुच में यही है? क्या धर्म, मेल और आनन्द को बढ़ाना आवश्यक है?''

प्रभु के लिए काम करो

आयत 18 में पौलुस ने चर्चा में यहां तक अपने विचारों को संक्षिप्त किया: ''जो कोई इस रीति से मसीह की सेवा करता है, वह परमेश्वर को भाता है और मनुष्यों में ग्रहण योग्य ठहरता है।'' ''इस रीति से'' आयत 1 से लेकर प्रेरित की सब बातों को समेट लेता है। इसमें किसी भाई को ग्रहण करने और उस पर दोष न लगाने की बात शामिल है। इसमें किसी भाई के रास्ते में रुकावट न बनने के लिए त्याग देना शामिल है। इसमें उस भाई के लिए ''जिसके लिए ममीह मरा'' प्रेम दिखाते रहना आवश्यक है। आपको और मुझे यह अपने *भाई* की सेवा करना लग सकता है, परन्तु पौलुस ने इसे *मसीह* की सेवा करना माना। पौलुस ने सब कुछ मसीह से जोड़ा (देखें 1 कुरिन्थियों 2:2)। फिर उसने मुद्दे को कौन सही और कौन गलत के प्रश्न से ऊपर उठा दिया। उसने इसे प्रभु की सेवा करें या न करें का मसला बना दिया।

यदि हम मसीह की आज्ञा के अनुसार व्यवहार करके मसीह की सेवा करेंगे तो हम पहले ''परमेश्वर को ग्रहण योग्य'' होंगे। प्रभु को भाना सबसे बड़ी बात है। परन्तु इससे एक और अपेक्षित परिणाम निकल सकता है कि हम ''मनुष्यों के ग्रहण योग्य'' बन जाएंगे।[34] जब किसी मण्डली में प्रेम और एकता पाई जाती है तो बाहरी संसार भी उससे प्रभावित होता है। एक अनुवाद में इस प्रकार है ''जो इस तरह से मसीह की सेवा करता है वह ... सब लोगों में आदरणीय होता है'' (मेकोर्ड)।

सारांश

मांस खाने के मुद्दे पर पौलुस की परिचर्चा अध्याय 14 की अन्तिम आयतों में और अध्याय 15 की आरम्भिक आयतों में जारी रहती है। तौभी उसके तर्क का सार 14:15 में मिलता है कि

''जिसके लिए मसीह मरा।'' एफ़. एफ़. ब्रूस ने कहा है, ''ये ... शब्द मानवीय जीव के महत्व के ईश्वरीय नाप को व्यक्त करते हैं।''[35]

इस पाठ में हमने बार-बार देखा है कि पौलुस ने किस प्रकार से चर्चा को ऊपरी स्तर तक उठाया है। एक अर्थ में उसने कहा कि हमारी चिंता मांस खाने या मांस न खाने की नहीं होनी चाहिए, बल्कि मसीहियत तो ... है।

- उस भाई की चिंता जो आत्मिक रूप से जर्जर है।
- प्रेम दिखाना।
- हम उनसे कैसे व्यवहार करें ''जिनके लिए मसीह मरा।''
- हमारे कामों से कलीसिया का दृष्टिकोण संसार को कैसे प्रभावित करता है।
- हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है।
- मसीह की सेवा करना!

यदि पौलुस के सुझाव गुस्से को ठण्डा नहीं करते तो कोई और बात नहीं कर सकेगी। यदि उसकी बातों से मेल-मिलाप नहीं होता तो हमारे मनों में बहुत अधिक गड़बड़ है!

प्रचारकों तथा सिखाने वालों के लिए नोट्स

इस पाठ का इस्तेमाल करते हुए सुनने वालों से कलीसिया अर्थात उद्धार पाए हुए लोगों का समूह बनने का आग्रह करें ''जिनके लिए मसीह मरा'' (देखें इफिसियों 5:23, 25)। आप उन मसीही लोगों को उत्तर देने को प्रोत्साहित करें, जिनकी बातों और कामों के कारण मसीह के काम की ''निंदा की जाती'' है (रोमियों 14:16; KJV)। पहले वाले समूह को विश्वास करके, मन फिराना और बपतिस्मा लेना आवश्यक है (यूहन्ना 3:16; लूका 13:3; मरकुस 16:16)। दूसरे समूह वालों को अपनी गलतियों को मानकर, मन फिराना और मसीह में अपने भाइयों और बहनों को प्रार्थना करने के लिए कहना चाहिए (प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:9; याकूब 5:16)।

इस प्रस्तुति को समाप्त करते हुए समीक्षा करने का एक और ढंग इस प्रस्तुति में सुझाए गए प्रश्नों को अपने पाठकों को याद दिलाना होगा। ये वे प्रश्न हैं जो हम सभी को अपने आप से पूछने चाहिए।

यह प्रस्तुति और ''सही होने से बढ़कर महत्वपूर्ण? (14:19-23)'' शीर्षक वाली प्रस्तुति एक ही पाठ के दो भाग हैं। सही होने से भी बढ़कर आप इन्हें मिलाना चाहें तो मिला सकते हैं। आप इन दोनों में से किसी प्रस्तुति का इस्तेमाल इन दो मुख्य शीर्षकों के साथ कर सकते हैं:

''यह निर्णय करना भूल जाओ कि एक-दूसरे के लिए सही क्या है। आपको इस बात का ध्यान होना चाहिए कि आप किसी दूसरे के रास्ते में न आओ, जिससे जीवन पहले से कहीं और कठिन हो जाए।''

टिप्पणियां

[1]विलियम बार्कले, *दि लैटर टू द रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 193. [2]याद रखें कि रोमियों 14 विचार के मामलों पर है। [3]हेफर्ड ई. लब्बॉक, *प्रीचिंग वैल्यूस इन द एपिस्टल ऑफ़ पॉल,* अंक. 1, *रोमन्स एंड फर्स्ट कोरन्थियंस* (न्यू यॉर्क: हार्पर एंड ब्रदर्स, 1959), 102. [4]वही। [5]चार्ल्स आर. स्विन्डल, *दि ग्रेस अवेकनिंग* (अनहेम, कैलिफोर्निया: इनसाइट फॉर लिविंग, 1990), 49-50. [6]NEB में ''आओ ... *एक-दूसरे का न्याय करना* छोड़कर इसे केवल *न्याय* बना दें'' है। [7]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 441 में एक ही शीर्षक के अधीन दोनों शब्द दिए गए हैं। ये शब्द अर्थ में इतने मिलते जुलते हैं कि, जहां NASB में ''ठेस'' पहले है और बाद में ''ठोकर,'' वहीं कई अनुवादों में इसके क्रम को उलटा दिया गया है। [8]जिम मैक्गुइगन ने टिप्पणी की, ''कमज़ोर लोगों से ऊपर से स्नेहहीन लम्बे-लम्बे कीलदार नाल वाला आचरण लज्जाजनक है!'' (जिम मैक्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़ [लब्बॉक, टैक्सस: मोंटैक्स पब्लिशिंग कं., 1982], 401)। [9]आर. सी. एच. लैंसकी, *दि इंटरप्रेटेशन ऑफ़ सेंट पॉल'स एपिस्टल टू द रोमन्स* (मिनियापोलिस: आग्सबर्ग पब्लिशिंग हाउस, 1936), 832. [10]वाइन, 441.

[11]जिमी एलन, *रोमन्स, दि क्लीयरसट गॉस्पल ऑफ़ ऑल* (सरसी आरकैंसा: लेखक द्वारा, 2005), 285. [12]ये सभी तथा और सम्भावनाएं विभिन्न अनुवादों तथा संस्करणों में मिलती हैं। [13]वाइन, 113, 649. [14]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 365. [15]रिचर्ड ए. बेटे, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* द लिविंग वर्ड कमैंट्री (ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1969), 171. [16]आप चाहें तो *रोमियों, 1* पुस्तक में ''अन्यजातियां, विवेक और मिशन कार्य (2:14, 15)'' पाठ में विवेक पर सामग्री पर समीक्षा कर सकते हैं। [17]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 487. [18]वाइन, 281. [19]डग्लस जे. मू., *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशंस कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 460. [20]इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''जब मसीही लोग असहमत होते हैं (14:1-4)'' में आयत 1 पर टिप्पणियां देखें।

[21]''टिक्का'' शब्द को जहां आप रहते हैं, वहां इस्तेमाल होने वाली मीट की स्पैशल डिश में बदल लें। [22]''चलता'' ''जीने'' के लिए पौलुस की पसंदीदा अभिव्यक्तियों में से एक था। [23]मौरिस, 487. [24]फ्रिज रेंडर, संस्क., *हाऊ टू बी ए क्रिश्चियन विदाउट बीइंग रिलिजियस* (ग्लेनडेल, कैलिफोर्निया: रीगल बुक्स, जी/एल पब्लिकेशंस, 1967), 124. [25]मू., 460. [26]वाइन, 164. [27]स्टॉट, 365. [28]''निंदा हो'' के अनुवाद वाले यूनानी वाक्यांश का मूल अर्थ ''निंदा हो'' है। [29]जिम टाउनसेंड, *रोमन्स, लेट जस्टिस रोल* (एलजिन, इलिनोइस: डेविड सी. कुक पब्लिशिंग कं., 1988), 93. से लिया गया। [30]हमें पक्का पता नहीं है कि पौलुस ने यहां ''पीना'' की बात क्यों की जब तक वह केवल सामान्य अर्थ में भोजन की बात न कर रहा हो? खाना और पीना भोजन के आवश्यक भाग हैं। आयत 21 पर चर्चा देखें।

[31]मत्ती 16:18, 19 में ''कलीसिया'' और ''राज्य'' शब्द का इस्तेमाल किया गया है। पौलुस ने कभी ''राज्य'' शब्द का इस्तेमाल नहीं किया (रोमियों में यहां पहली बार यह शब्द मिलता है); उसने आम तौर पर ''कलीसिया'' की ही बात की। यहां उसने शायद यह ज़ोर देने के लिए इस्तेमाल किया कि प्रभु का *शासन* किसी भी व्यक्ति के *अधिकारों* से अधिक महत्व रखता है। [32]''धर्म, मिलाप और आनन्द'' का अर्थ वह हो सकता है जो *परमेश्वर* ने हमारे लिए किया और कर रहा है, परन्तु संदर्भ उस पर ध्यान दिलाता प्रतीत होता है जो *हमें* करना आवश्यक है। [33]आप इस पर विचार करें कि पवित्र आत्मा मसीही व्यक्ति के लिए क्या करता है (रोमियों 8)। [34]इसका अर्थ ''कमज़ोर'' भाइयों द्वारा स्वीकृत होना हो सकता है, परन्तु व्यापक प्रासंगिकता आवश्यक लगती है। [35]एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू दि रोमन्स,* संशो. संस्क., टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1996 रिप्रिंट), 238.